

NEXT IAS

दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

स्वतंत्रता संग्राम में प्रेस की भूमिका
और समकालीन महत्त्व

www.nextias.com

स्वतंत्रता संग्राम में प्रेस की भूमिका और समकालीन महत्व

संदर्भ

- हाल ही में राष्ट्रीय प्रेस दिवस 'प्रेस का परिवर्तित स्वरूप (Changing Nature of the Press)' थीम के साथ मनाया गया, जो मीडिया परिदृश्य की विकसित होती गतिशीलता को दर्शाता है और उस दिन को चिह्नित करता है जब 1966 में भारतीय प्रेस परिषद (PCI) ने अपना संचालन शुरू किया था।

परिचय

- मीडिया, जिसे प्रायः लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है, राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसका प्रभाव राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में फैला हुआ है, जो इसे एक कार्यशील लोकतंत्र का एक अनिवार्य हिस्सा बनाता है।
- प्रेस ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, सूचना के प्रसार के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में कार्य किया; जागरूकता एवं चेतना बढ़ाई; जनमत को आकार दिया; विभिन्न समुदायों को एकजुट किया; औपनिवेशिक नीतियों की आलोचना की; विरोध और आंदोलनों को संगठित किया; नेताओं के लिए एक मंच प्रदान किया; राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया; अहिंसक प्रतिरोध को बढ़ावा दिया।

भारत में प्रेस का विकास

- जेम्स ऑगस्टस हिक्की द्वारा स्थापित बंगाल गजट (1780) भारत का पहला मुद्रित समाचार पत्र था। इसे 'कलकत्ता जनरल एडवर्टाइजर' के नाम से जाना जाता है, यह प्रायः ब्रिटिश राज की आलोचना करता था, जिसने भविष्य के प्रकाशनों के लिए उदाहरण प्रस्तुत किया।
- अंग्रेजों ने औपनिवेशिक काल के दौरान प्रेस को नियंत्रित करने के लिए कई नियम बनाए।
 - प्रेस अधिनियम 1799 का सेंसरशिप का उद्देश्य फ्रांसीसियों को ब्रिटिश विरोधी प्रचार करने से रोकना था, और इसके बाद लाइसेंसिंग विनियमन, 1823 आया, जिसके तहत समाचार पत्रों को सरकार से लाइसेंस प्राप्त करना आवश्यक था।
 - 1878 के वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम ने भारतीय भाषा के समाचार पत्रों को लक्षित किया, जिसने अंग्रेजों को 'देशद्रोही' सामग्री प्रकाशित करने वाले समाचार पत्रों की प्रिंटिंग प्रेस और संपत्ति जब्त करने की अनुमति दी।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान प्रमुख प्रकाशन और उनका प्रभाव

- अमृत बाजार पत्रिका (1868):** शुरू में यह एक बंगाली साप्ताहिक था, लेकिन बाद में यह एक प्रमुख अंग्रेजी भाषा का समाचार पत्र बन गया। यह ब्रिटिश नीतियों की तीखी आलोचना के लिए जाना जाता था और इसने जनमत को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- केसरी और मराठा (1881):** बाल गंगाधर तिलक द्वारा स्थापित, इन समाचार पत्रों ने स्वराज (स्व-शासन) के उद्देश्य को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। तिलक ने केसरी का उपयोग लोगों को प्रेरित करने और उन्हें संगठित करने के लिए किया, जिसमें उन्होंने प्रसिद्ध रूप से घोषणा की, "स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा"।
- द हिंदू (1878):** जी. सुब्रमण्यम अय्यर द्वारा स्थापित, यह ब्रिटिश शासन के विरुद्ध एक अग्रणी आवाज बन गया। द हिंदू अपनी संतुलित रिपोर्टिंग के लिए जाना जाता था और इसने जनमत को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

- **यंग इंडिया और हरिजन:** महात्मा गांधी द्वारा प्रकाशित, इन पत्रिकाओं का उपयोग अहिंसा और सविनय अवज्ञा के उनके विचारों का प्रचार करने के लिए किया गया था। वे स्वतंत्रता आंदोलन के संदेश को व्यापक दर्शकों तक फैलाने में महत्वपूर्ण थे।

स्वतंत्रता के बाद का युग

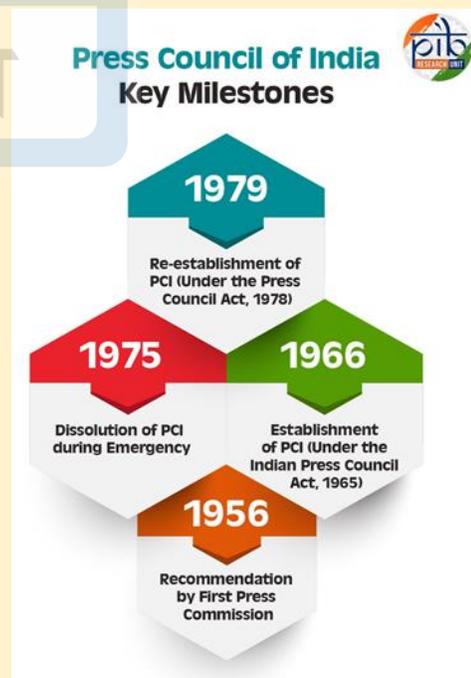
- आपत्तिजनक सामग्री के प्रकाशन पर अंकुश लगाने के लिए 1951 का प्रेस (आपत्तिजनक मामले) अधिनियम बनाया गया था, लेकिन इसके दुरुपयोग के कारण 1957 में इसे निरस्त कर दिया गया।
- बाद में प्रेस की स्वतंत्रता को बनाए रखने और पत्रकारिता के मानकों को सुधारने के लिए 1966 में भारतीय प्रेस परिषद की स्थापना की गई।

समकालीन प्रेस का विकास

- **डिजिटल परिवर्तन:** प्रिंट से डिजिटल में परिवर्तन ने समाचार के उत्पादन, वितरण और उपभोग के तरीके में क्रांतिकारी परिवर्तन किया है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया और मोबाइल एप्लिकेशन ने समाचार को अधिक सुलभ और तत्काल बना दिया है।
- **मीडिया कन्वर्जेंस:** पारंपरिक पत्रकारिता को डिजिटल तकनीकों के साथ मिलाने से मीडिया कन्वर्जेंस हुआ है, जहाँ मीडिया के विभिन्न रूप (टेक्स्ट, ऑडियो, वीडियो) एक ही प्लेटफॉर्म पर एकीकृत हो गए हैं। इससे समाचार संगठनों की कहानी कहने की क्षमता में वृद्धि हुई है।
- **नागरिक पत्रकारिता:** सोशल मीडिया के उदय ने आम नागरिकों को प्रायः वास्तविक समय में समाचार रिपोर्ट करने का अधिकार दिया है। इसने सूचना प्रसार को लोकतांत्रिक बनाया है, लेकिन ऐसी रिपोर्टों की सटीकता और विश्वसनीयता के बारे में चिंताएँ भी उत्पन्न की हैं।

भारतीय प्रेस परिषद (PCI)

- 1956 में प्रथम प्रेस आयोग ने प्रेस की स्वतंत्रता की रक्षा और नैतिक पत्रकारिता को बढ़ावा देने के लिए एक स्वायत्त निकाय की आवश्यकता पर बल दिया।
- PCI का आधिकारिक रूप से भारतीय प्रेस परिषद अधिनियम, 1965 के तहत गठन किया गया था और 16 नवंबर, 1966 को इसका संचालन शुरू हुआ।
- तब से, 16 नवंबर को राष्ट्रीय प्रेस दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- हालांकि, 1975 में आपातकाल के दौरान परिषद को भंग कर दिया गया था, और एक नए अधिनियम, प्रेस परिषद अधिनियम, 1978 ने 1979 में PCI को फिर से स्थापित किया, जिसने वैधानिक प्राधिकरण के साथ एक अर्ध-न्यायिक निकाय के रूप में इसकी भूमिका की पुष्टि की।
- यह एक नैतिक प्रहरी के रूप में कार्य करता है, यह सुनिश्चित करता है कि प्रेस बाहरी प्रभावों से मुक्त रहे और पत्रकारिता के उच्च मानकों को बनाए रखे।
- यह अनैतिक रिपोर्टिंग या प्रेस की स्वतंत्रता में हस्तक्षेप से संबंधित शिकायतों की स्वप्रेरणा से जांच या कार्रवाई कर सकता है। इसके निर्णय अंतिम होते हैं और किसी भी न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती।



- पिछले कुछ वर्षों में, PCI ने भारतीय पत्रकारिता के नैतिक ढांचे को आकार देने और मीडिया की स्वतंत्रता की रक्षा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- प्रतिष्ठित राजा राम मोहन राय पुरस्कार पत्रकारिता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान को मान्यता देने वाला सर्वोच्च सम्मान है।

राष्ट्र निर्माण में मीडिया की भूमिका

राजनीतिक क्षेत्र:

- **लोकतंत्र और सुशासन को बढ़ावा देना:** मीडिया एक निगरानीकर्ता के रूप में कार्य करता है, जो सत्ता में बैठे लोगों को जवाबदेह ठहराता है। भ्रष्टाचार, कुप्रशासन एवं मानवाधिकारों के हनन को उजागर करके, यह पारदर्शिता सुनिश्चित करता है और सुशासन को बढ़ावा देता है।
- **जनमत को आकार देना:** समाचार रिपोर्टों, संपादकीय और परिचर्चाओं के माध्यम से, मीडिया विभिन्न मुद्दों पर जनमत को आकार देता है। यह एक जागरूक नागरिक वर्ग बनाने में सहायता करता है जो लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में सार्थक रूप से भाग ले सकता है।
- **राजनीतिक भागीदारी को सुविधाजनक बनाना:** मीडिया प्लेटफॉर्म राजनीतिक चर्चा के लिए एक स्थान प्रदान करते हैं, जिससे नागरिक राजनीतिक प्रक्रियाओं से जुड़ पाते हैं। इसमें चुनावों, राजनीतिक अभियानों और नीति चर्चाओं का कवरेज शामिल है।

आर्थिक क्षेत्र:

- **आर्थिक विकास:** मीडिया सरकारी नीतियों, आर्थिक सुधारों और बाजार के रुझानों के बारे में जानकारी प्रसारित करके आर्थिक विकास में भूमिका निभाता है। यह व्यवसायों और व्यक्तियों को सूचित निर्णय लेने में सहायता करता है।
- **उद्यमिता को बढ़ावा देना:** सफलता की कहानियों को उजागर करके और व्यावसायिक अवसरों के बारे में जानकारी प्रदान करके, मीडिया उद्यमशीलता तथा नवाचार को प्रोत्साहित करता है।
- **उपभोक्ता जागरूकता:** मीडिया अभियान उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों एवं जिम्मेदारियों के बारे में शिक्षित करते हैं, निष्पक्ष व्यापार प्रथाओं को बढ़ावा देते हैं और उपभोक्ता हितों की रक्षा करते हैं।

सामाजिक क्षेत्र:

- **सामाजिक जागरूकता और शिक्षा:** मीडिया स्वास्थ्य, शिक्षा और पर्यावरण संरक्षण जैसे सामाजिक मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाता है। यह जनता को शिक्षित करने और सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- **सांस्कृतिक एकीकरण:** विविध संस्कृतियों और परंपराओं को प्रदर्शित करके, मीडिया राष्ट्रीय एकता तथा सांस्कृतिक एकीकरण को बढ़ावा देता है। यह राष्ट्रीय पहचान और गौरव की भावना का निर्माण करने में सहायता करता है।
- **आपदा प्रबंधन:** प्राकृतिक आपदाओं और आपात स्थितियों के दौरान, मीडिया महत्वपूर्ण जानकारी एवं अपडेट प्रदान करता है, जिससे आपदा प्रबंधन तथा राहत प्रयासों में सहायता मिलती है।

चुनौतियाँ और जिम्मेदारियाँ

- **गलत सूचना और फेक न्यूज़:** गलत सूचना का तेजी से प्रसार जनता के विश्वास को कमजोर कर सकता है और सामाजिक सद्भाव को बाधित कर सकता है। मीडिया संगठनों को इस मुद्दे से निपटने के लिए तथ्य-जांच तथा सत्यापन प्रक्रियाओं में निवेश करना चाहिए।

- **आर्थिक दबाव:** डिजिटल मीडिया में परिवर्तन ने पारंपरिक राजस्व मॉडल को बाधित कर दिया है, जिससे कई समाचार संगठनों के लिए वित्तीय चुनौतियां उत्पन्न हो गई हैं। इससे कभी-कभी पत्रकारिता के मानकों से समझौता हो सकता है।
- **सेंसरशिप और प्रेस की स्वतंत्रता:** राष्ट्रीय सुरक्षा और सार्वजनिक व्यवस्था को संतुलित करते हुए प्रेस की स्वतंत्रता सुनिश्चित करना एक महत्वपूर्ण चुनौती बनी हुई है।
- मीडिया संगठनों को लोकतंत्र के प्रहरी के रूप में अपनी भूमिका बनाए रखने के लिए इन मुद्दों पर सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए।

आगे की राह: आधुनिक डिजिटल युग में जिम्मेदारियाँ

- **नैतिक मानकों को बनाए रखना:** पत्रकारों और समाचार संगठनों को अपनी रिपोर्टिंग में सटीकता, निष्पक्षता और तटस्थता सुनिश्चित करते हुए नैतिक मानकों का पालन करना चाहिए। यह जनता के विश्वास और विश्वसनीयता को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है।
- **तथ्य-जांच और सत्यापन:** सूचना के प्रसार के साथ, गलत सूचना से निपटने के लिए कठोर तथ्य-जांच और सत्यापन प्रक्रियाएँ आवश्यक हैं। समाचार संगठनों को अपनी सामग्री की विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए उपकरणों तथा प्रशिक्षण में निवेश करना चाहिए।
- **दर्शकों से जुड़ना:** डिजिटल युग दर्शकों के साथ अधिक से अधिक बातचीत के अवसर प्रदान करता है। समाचार संगठन पाठकों से जुड़ने, प्रतिक्रिया एकत्र करने और अधिक सूचित एवं सहभागी जनता को बढ़ावा देने के लिए सोशल मीडिया तथा अन्य डिजिटल उपकरणों का उपयोग कर सकते हैं।
- **मीडिया साक्षरता को प्रोत्साहन देना:** मीडिया साक्षरता के बारे में जनता को शिक्षित करना महत्वपूर्ण है। इसमें लोगों को समाचार स्रोतों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना, पूर्वाग्रह को पहचानना और विश्वसनीय सूचना एवं गलत सूचना के बीच अंतर करना सिखाना शामिल है।

निष्कर्ष

- राष्ट्र निर्माण में मीडिया की भूमिका बहुआयामी और अपरिहार्य है। पारदर्शिता को बढ़ावा देने, आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और सामाजिक जागरूकता बढ़ाने के ज़रिए मीडिया राष्ट्र की प्रगति एवं स्थिरता में महत्वपूर्ण योगदान देता है।
- डिजिटल युग के अनुकूल होने के साथ-साथ मीडिया को अपनी जिम्मेदारियों को निभाना जारी रखना चाहिए और लोकतंत्र का स्तंभ बने रहने के लिए चुनौतियों का सामना करना चाहिए।

Source: PIB



दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न. देश के स्वतंत्रता संग्राम को आकार देने में भारतीय प्रेस की महत्वपूर्ण भूमिका पर चर्चा करें, प्रमुख प्रकाशनों और पत्रकारों पर प्रकाश डालें। समकालीन प्रेस किस तरह विकसित हुआ है, और डिजिटल मीडिया के युग में लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखने तथा जनता को सूचित करने में इसकी प्राथमिक चुनौतियाँ एवं जिम्मेदारियाँ क्या हैं?